

पाठ -११ गृह प्रबंध



किसी भी घर को देखकर उस घर में रहने वालों के बारे में सहज ही अनुमान लगाया जा सकता है। यदि घर में सभी चीजें इधर-उधर बिखरी पड़ी हैं, तो निश्चित रूप से यह उस घर में रहने वालों की लापरवाही, स्वभाव तथा रहन-सहन को प्रदर्शित करता है। सलीके से रहने वालों के घर बिलकुल सजे-सँवरे होते हैं।

अच्छे गृह प्रबंध के लिए घर की साज-सज्जा एवं उसकी व्यवस्था का भी ज्ञान अनिवार्य है। इसके अलावा समय-समय पर भ्रमण संबंधी तैयारियों एवं घर की आवश्यकताओं के अनुरूप पत्रों का लेखन आदि जानना कुशल गृह-प्रबंधक के आवश्यक गुण हैं।



साज-सज्जा

अपने भाई-बहन के जन्मदिन या किसी त्योहार पर आप अपने घर को सजाते ही होंगे। उस समय आपको अपना घर कितना अच्छा लगता है। सच, सजा हुआ घर किसे अच्छा नहीं लगता। लेकिन ऐसी सजावट हम लोग प्रायः विशेष अवसरों पर ही करते हैं। सोचिए ! यदि आपका घर रोज ही इसी तरह सजा रहे तो आपको कितना आनंद आएगा। इसके लिए बहुत खर्च करने की आवश्यकता नहीं है। बस, अपने दृष्टिकोण में थोड़ा बदलाव लाना होगा।

सजावट या सज्जा से यह तात्पर्य नहीं है कि ढेर सारी महँगी वस्तुएँ घर में जुटा ली जाएँ। बल्कि घर की वस्तुओं को व्यवस्थित करके उनमें एक कलात्मकता उत्पन्न करना ही घर की साज-सज्जा करना है। घर की सजावट एक ऐसी कला है जिसके द्वारा हम कम खर्च और कम परिश्रम से अपने घर के वातावरण को आकर्षक व प्रभावपूर्ण बनाते हैं। यह कला घर में रहने वालों की कुशलता व सृजनात्मकता को प्रदर्शित करती है।

मनुष्य स्वभावतः सुंदरता के प्रति आकर्षित होता है। प्रतिदिन की भागदौड़ करके मनुष्य जब शाम को घर लौटता है तो यदि उसे घर साफ, सुंदर, सजा हुआ मिलता है तो उसके मन को सुकून मिलता है। घर की सजावट मानसिक व शारीरिक स्वास्थ्य के लिए आवश्यक है। घर की सजावट से हमें अनेक प्रकार के लाभ प्रत्यक्ष-अप्रत्यक्ष रूप से मिलते हैं:-

- घर की साज-सज्जा में वस्तुओं का एक व्यवस्थित क्रम होने से किसी भी वस्तु को ढूँढ़ने के लिए अनावश्यक श्रम नहीं करना पड़ता।
- सभी वस्तुएँ साफ-सुथरी व सुंदर ढंग से व्यवस्थित होने के कारण अधिक दिनों तक सुरक्षित रहती हैं।
- सुंदर व सजा हुआ घर सभी को आकर्षित करता है।
- घर की सजावट उस घर में रहने वाले सदस्यों में स्वानुशासन की प्रवृत्ति का विकास करता है।
- व्यवस्थित व सजे हुए घर में अनेक रोगों से भी बचा जा सकता है।
- गृह-सज्जा परिवार के सदस्यों में आध्यात्मिकता का विकास करती है।

घर की सजावट को हम दो रूपों में देखते हैं-

1. बाह्य सजावट
2. आंतरिक सजावट

बाह्य सजावट के अंतर्गत घर की बाहरी दीवारों की रंगाई-पुताई, घर के चारों ओर की साफ-सफाई, बागवानी आदि क्षेत्र आते हैं। आंतरिक सजावट के अंतर्गत घर के विभिन्न

कमरों, रसोई, स्नानगृह, शयनकक्ष, बैठक, पढ़ने का कक्ष आदि आते हैं।

सजावट के नियम

गृह सज्जा एक व्यवस्थित कला है। गृह सज्जा के नियम निम्नवत् हैं:

1. अनुरूपता

किसी कक्ष में सजी सामग्रियों की आपस में समानता दिखाई देना ही अनुरूपता है। यह अनुरूपता कई प्रकार से हो सकती है। रेखा, आकार या बनावट के आधार पर घर की सज्जा में अनुरूपता लाई जाती है।

2. अनुपात

गृह सज्जा का सबसे महत्वपूर्ण सिद्धांत अनुपात है। घर में सजी वस्तुएँ आकर्षक व सुंदर प्रतीत हों इसके लिए आवश्यक है कि उनके बीच रंग, आकार, बनावट के आधार पर एक निश्चित अनुपात हो। ऐसा न हो कि एक बड़ी मेज के समक्ष एक छोटा स्टूल रख दें या बड़े बेड पर छोटी चादर डाल दें।

3. संतुलन

एक वस्तु को केंद्र मानकर उसके चारों ओर विभिन्न वस्तुएँ रखकर आकर्षक प्रभाव उत्पन्न करने को संतुलन कहते हैं।

4. दबाव (आकर्षण)

इसके अनुसार सबसे अधिक महत्वपूर्ण वस्तु को केंद्र में रखकर उसके चारों ओर कम महत्वपूर्ण वस्तुएँ रखी जाती हैं।

5. लय

प्रकृति की प्रत्येक वस्तु में एक लय या क्रमायोजन होता है जैसे- शरीर के अंग, पशु, पक्षी, नदी, पहाड़। किसी भी चित्र में लय को बिगाड़ दिया जाए तो वह कार्टून बन जाता है। इसी प्रकार घर की सज्जा में लय का बिगाड़ना फूहड़पन को प्रदर्शित करता है।

सजावट के साधन

घर की साज-सज्जा के लिए विभिन्न प्रकार के साधनों की आवश्यकता पड़ती है। इसमें से अधिकांश चीजें तो घर में ही विद्यमान रहती हैं जरूरत है बस उनको सही क्रम देने की।

1. फर्नीचर



गृह-सज्जा का सबसे प्रमुख साधन हैं, फर्नीचर। इसके अंतर्गत मेज, कुर्सी, आलमारी, सोफा, पलंग, आदि आते हैं। आजकल लकड़ी, लोहे, बेंत और प्लास्टिक से बने सामान फर्नीचर के रूप में अधिक प्रयोग हो रहे हैं। फर्नीचर को घर में स्थान की उपयुक्तता के आधार पर उचित स्थान पर रखना चाहिए तथा इन्हें समय-समय पर पांछते, धुलते और पॉलिश करते रहना चाहिए।

2. परदे



गृह-सज्जा में फर्निचर के बाद परदों का ही सबसे प्रमुख स्थान है। दरवाजे, खिड़कियों पर लगे कलात्मक परदे घर की सुंदरता को बढ़ा देते हैं। घर में परदों का उपयोग एकांतता के लिए किया जाता है। आवश्यकतानुसार वायु, धूप, ठंड आदि को नियन्त्रित करने के लिए भी परदों का प्रयोग किया जाता है। परदे घर को सुसज्जित रखने के साथ-साथ खिड़की-दरवाजों के गुण-दोष को भी छिपाते हैं।

परदे का चुनाव कमरे के रंग, फर्निचर के रंग, खिड़की-दरवाजों के रंग को

ध्यान में रखकर किया जाता है। पर्दे रोज-रोज बदले नहीं जाते अतः सदैव मजबूत व टिकाऊ कपड़ों का ही परदा बनवाना चाहिए। समय-समय पर परदों की धुलाई तथा उनमें प्रेस भी करते रहना चाहिए।

3. कालीन/दरी/चटाई

कालीन, दरी, चटाई का उपयोग कमरे के फर्श की सज्जा के लिए किया जाता है। ये चीजें हमारे घर की सुंदरता को बढ़ाती ही हैं, साथ ही साथ हमें ठंड और गरम हवा से भी बचाती हैं। फर्श पर इनके बिछे रहने से खेल-खेल में बच्चों को चोट लगने की आशंका भी कम रहती है। इनका रंग भी कमरे की दीवारों, परदों, फर्निचर आदि के रंग को ध्यान में रखकर तय करना चाहिए।

4. पायदान

आजकल कई प्रकार के पायदान बाजार में उपलब्ध हैं। जूट, रबर से बने पायदानों का प्रयोग आज बहुतायत में हो रहा है। पायदान कमरे के दरवाजे पर रखे जाते हैं। इनके

उपयोग से कमरे को गंदगी से बचाने में मदद मिलती है।

5. चित्र/पेंटिंग्स

दीवारों को सुंदर बनाने के लिए उन पर चित्र या पेंटिंग्स लगाए जाते हैं। ये चित्र/पेंटिंग्स स्वयं भी तैयार किए जा सकते हैं या बाजार से खरीदे जा सकते हैं।

6. रंगोली



कच्चे मकान के फर्श को रंगोली से सजाया जाता है। आजकल पक्के फर्श पर भी आकर्षक रंगों से रंगोली बनाई जा रही है।

7. फूल-पौधे

गमलों में लगे पौधों से भी कक्ष की सुंदरता बढ़ जाती है। मनीप्लांट, कैक्टस, क्रोटन आदि के पौधे कक्ष के वातावरण को प्राकृतिक बनाने में मदद करते हैं। फूलों के गुलदस्ते कक्ष को खुशनुमा बनाते हैं।

8. बिजली के उपकरण

आजकल विद्युत चालित सामग्री के सजावट का चलन जोरों पर है। बाजार में ऐसी तमाम चीजें हमें सस्ते दरों पर मिल जाती हैं जो हमारे घर की सुंदरता बढ़ाती हैं।

9. मनोरंजन के साधन

हमारे घरों में मनोरंजन के साधनों के रूप में टेप, रेडियो, टी.वी. आदि का उपयोग किया जाता है। कक्ष में इनका उचित संयोजन कक्ष की सुंदरता बढ़ाता है।

10. पत्र-पत्रिकाएँ

पुस्तकें, ज्ञानवर्धन के साथ-साथ घर की सज्जा में भी महत्वपूर्ण भूमिका निभाती हैं। पुस्तकों के रख-रखाव पर पूरा ध्यान देना चाहिए। समय-समय पर इनकी साफ-सफाई करते रहना चाहिए। दैनिक समाचार पत्रों/पत्रिकाओं का उपयोग मेज पर सजाने के लिए भी किया जाता है।

बैठक की सजावट

घर के सबसे महत्वपूर्ण कमरे को बैठक बनाया जाता है। बैठक हमारे घर में मेहमानों के बैठने का कमरा होता है। इस कक्ष की साज-सज्जा का हमें विशेष ध्यान रखना चाहिए।

बैठकों की सजावट की दो शैलियाँ हैं-

- भारतीय शैली
- पाश्चात्य शैली।

भारतीय शैली



यह परम्परागत शैली है। भारतीय शैली के अनुसार बैठक की सजावट निम्नलिखित तरीके से की जाती है-

- बैठक में एक तख्त या दीवान बिछाया जाता है, जिस पर एक गद्दा और चादर बिछी रहती है।
- दीवान या तख्ते पर आकार के अनुसार दो-तीन तकिया/मसनद भी रहना चाहिए।
- बैठक में एक छोटी मेज के साथ एक-दो मोढ़ा भी रखे जाते हैं। मेज पर फूलदान रखने से सुंदरता बढ़ जाती है।
- कक्ष में पुस्तकों की आलमारी, टी0वी0, चित्र, लैम्प आदि के उचित संयोजन से बैठक को और सुंदर बनाया जा सकता है।
- बैठक की फर्श को कालीन/दरी/चटाई से आकर्षक रूप दिया जाता है।
- दरवाजे के पास एक पायदान रखा जाता है।

पाश्चात्य शैली



अधिक आय वाले लोग इस शैली को अपनाते हैं क्योंकि यह अपेक्षाकृत मँहगी शैली है। इसके अनुसार बैठक को निम्नलिखित तरीके से सजाया जा सकता है-

- कमरे में एक या दो सोफे रखे जाते हैं। सोफे पर आकर्षक कवर चढ़ाए जाते हैं।
- केन्द्र में एक टेबल रखी जाती है। फूलदान, लैम्प, खिलौने आदि के द्वारा उसे आकर्षक बनाया जाता है।
- सोफे के अलावा दो चार कुर्सियाँ भी रखी जाती हैं।
- फर्श पर दरी या कालीन बिछाई जाती है। बैठक में एक-दो गमले भी रखे जाते हैं।
- दीवारों को सुंदर कलाकृतियों से सजाया जाता है।
- पुस्तकों की आलमारी बैठक की सुंदरता को बढ़ा देती है।
- बैठक में टी0वी0, म्यूजिक सिस्टम भी रखा जाता है।
- दरवाजे-खिड़कियों पर आकर्षक परदे लगाए जाते हैं।

बैठक की सजावट की यही दो प्रचलित शैलियाँ हैं। आजकल प्रायः एक नई शैली का प्रयोग किया जाता है। यह भारतीय और पाश्चात्य दोनों शैलियों का मिलाजुला रूप होता है। इसे मिश्रित शैली भी कहते हैं।

सजावट को अपने विवेक के अनुसार आकर्षक रूप दिया जा सकता है। इसके लिए समय-समय पर अखबारों, पत्रिकाओं में लेख भी निकलते रहते हैं। ये घर की सजावट को सुंदर बनाने में मदद कर सकते हैं। ऐसी बातें रेडियो, टी0वी0 पर भी विभिन्न कार्यक्रमों में बताई जाती हैं। उनको देख-सुनकर भी आप अपने घर की सजावट को आकर्षक बना सकते हैं।

सामान्य शिष्टाचार

यदि आप किसी के घर जाएं और वह आपसे बात न करें तो आपको कैसा लगेगा?

निश्चित ही आपको बहुत ग्लानि महसूस होगी। घर की सुंदरता का आंकलन वस्तुओं की साज-सज्जा से कम, उस घर में रहने वाले लोगों के व्यवहार से ज्यादा आँकी जाती है। हर कोई चाहता है कि उसके घर लोग आएँ। उसके घर की सराहना करें। उसके व्यवहार की प्रशंसा करें लेकिन यह तभी संभव है जब आप अपने उचित व्यवहार से उनका दिल जीत लें।

आप सभी की प्रशंसा के पात्र बन सकते हैं यदि-

- आपके घर कोई आए, उसे नमस्ते करिए, बैठने के लिए कहिए और मौसम के अनुसार उसे चाय-शरबत पिलाइए।
- आगंतुक को पूरा समय दीजिए, उसे उपेक्षित न करिए।
- आगंतुक से उसके घर-परिवार, स्वास्थ्य, रहन-सहन के बारे में बात करिए तथा अपने बारे में भी बताइए।

- खुशी के मौकों पर लोगों को बधाई और दुखों में सांत्वना देने से लोग स्वतः ही आपको चाहने लगेंगे।
- अपने घर की साज-सज्जा में मम्मी-पापा का हाथ बटाइए और पूरा सहयोग करिए।
- समय-समय पर दूसरों के घर जाइए और उनके सुख-दुख में हाथ बटाइए।
- विशेष अवसरों पर लोगों को अपने यहाँ बुलाइए और उनकी खातिरदारी करिए।
- बड़ों के लिए सम्मान व छोटों के लिए स्नेहयुक्त भाषा का प्रयोग करिए।

यात्राओं की तैयारी

प्रायः हर घर में छुट्टियों के समय छोटी-बड़ी यात्राएँ की जाती हैं। ऐसी यात्राएँ रिश्तेदारों के यहाँ शादी-विवाह के मौकों पर भी की जाती हैं।

यात्राओं की तैयारी आप कैसे करते हैं ?

किसी भी यात्रा की तैयारी के लिए कुछ सवालों पर विचार कर लेना चाहिए-

- कहाँ की यात्रा करनी है?
- यात्रा में कितने दिन लगेंगे ?
- यात्रा किस साधन से करेंगे ?
- यात्रा का उद्देश्य क्या है ?
- यात्रा किस मौसम में की जा रही है ?

इन सवालों पर विचार करते हुए आप अपनी यात्रा की तैयारी तीन हिस्सों में बाँटकर कर सकते हैं-

1. पूर्व तैयारी- जहाँ जाना हो वहाँ के विषय में पूरी जानकारी प्राप्त कर लेना तथा वहाँ पहुँचने के रास्ते, साधन आदि के बारे में जान लेना यात्रा की पूर्व तैयारी है। मौसम के अनुसार ठंडे-गरम कपड़ों का चयन भी करना चाहिए। यात्रा की अवधि के अनुसार रास्ते के लिए खाद्य-सामग्री की व्यवस्था पहले से ही कर लेनी चाहिए। लंबी यात्रा के लिए टिकट आदि की व्यवस्था भी कर लेनी चाहिए।

2. यात्रा के समय- यात्रा यथा संभव हल्के बैग में कम सामान लेकर करनी चाहिए। अनावश्यक सामानों का बोझ यात्रा में परेशानी का कारण बनती है। यात्रा के दौरान अपरिचित द्वारा दी गई खाद्य सामग्री का प्रयोग नहीं करना चाहिए। यदि यात्रा घूमने के उद्देश्य से की जा रही हो तो रास्ते में पड़ने वाले दर्शनीय स्थलों के बारे में जानकारी ले लेना चाहिए।

3. यात्रा के पश्चात् - यात्रा से लौटने के उपरांत बैग में पड़े सामानों को तुरंत निकालकर यथास्थान रख देना चाहिए। गंदे वस्त्रों को धोकर रखना चाहिए। भ्रमण के उद्देश्य से की गई यात्रा के पश्चात् अपने अनुभवों के बारे में लोगों से बातचीत करना तथा उनके बारे में कुछ न कुछ लिखना अवश्य चाहिए।

यात्रा करने के लाभ-

यात्रा करने से निम्नलिखित लाभ होते हैं:-

- स्वास्थ्य-सुधार के हेतु यात्रा लाभप्रद होती है।
- यात्रा करने से ज्ञान में वृद्धि होती है।
- अनेक अनुभवों की प्राप्ति होती है।
- यात्रा करने से विभिन्न धर्मों तथा रीति-रिवाजों का ज्ञान होता है।
- यात्रा से मनोरंजन होता है।

पत्र लेखन

संचार के इस बढ़ते युग में भी पत्रों की अलग उपयोगिता है। हम अपने दूर-दराज के रिश्ते-नातेदारों का हालचाल पत्रों के द्वारा ही करते हैं। घर में आवश्यकताओं की पूर्ति के लिए भी संबंधित को पत्र लिखे जाते हैं। पत्र दो प्रकार के होते हैं-

1. व्यक्तिगत पत्र

2. आवेदन पत्र

व्यक्तिगत पत्र - व्यक्तिगत पत्रों के द्वारा हम अपने संबंधियों की कुशलता जानते हैं। व्यक्तिगत पत्रों के अंतर्गत निम्नलिखित प्रकार के पत्र आते हैं -

1. निमंत्रण पत्र- शादी-विवाह उत्सव, जन्मदिन आदि के आयोजन संबंधी सूचना अपने संबंधियों को इसी पत्र के माध्यम से देते हैं।
2. बधाई-पत्र- विशेष अवसरों, त्योहारों, जन्मदिन, नए साल आदि की बधाइयाँ बधाई-पत्रों के द्वारा दी जाती हैं।
3. पारिवारिक पत्र- इसके अंतर्गत हम अपने दूर के रिश्तेदारों से उनका हाल-समाचार जानते हैं। यह पत्र अंतर्देशीय पत्रों, पोस्टकार्ड्स आदि पर लिखे जाते हैं।

व्यावसायिक पत्र

घर में बिजली ठीक करने के लिए यदि हमें विद्युत विभाग के जिम्मेदार कर्मचारी या अधिकारी को कहना है तो हम उससे लिखित रूप से कहते हैं। ऐसे पत्रों में अपने कार्य के लिए निवेदन किया जाता है। छुट्टियों के लिए, नौकरियों के लिए आवेदन पत्र ही लिखे जाते हैं। इन सभी पत्रों को व्यावसायिक पत्र कहते हैं।

कैसे लिखें पत्र ?

पत्रों की शुरुआत संबोधन से होती है। यदि अपने से बड़े को पत्र लिखते हैं तो उसके लिए आदरसूचक संबोधन शब्दों जैसे- आदरणीय, सम्माननीय, माननीय, महोदय, जैसे शब्दों का प्रयोग करते हैं। बराबरी या छोटों के लिए स्नेहसूचक शब्दों जैसे प्रिय, प्रियतम, आदि का प्रयोग किया जाता है।

पत्र के बीच में जो कहना है वह लिखा जाता है तथा सबसे अन्त में धन्यवाद देते हुए लिखने वाला अपना नाम-पता लिखता है।

पत्रों के कुछ नमूने यहाँ दिए जा रहे हैं:

व्यक्तिगत पत्र

वाराणसी

16.10.2018

आदरणीय पापा जी,

प्रणाम!

आपके यहाँ से जाने के बाद घर में बहुत कुछ बदल गया। मम्मी ने किताबों की आलमारी पूरब के कोने में रख दी। मेज पर रखी सभी पत्रिकाएं आलमारी में रख दी गईं। भइया के स्कूल में छमाही परीक्षा चल रही है। मेरी परीक्षाएँ हो चुकी हैं। मैं कलर बुक पर रोज एक चित्र बनाती हूँ। आपके कमरे को मैंने और भइया ने चित्रों से सजा दिया है।

आप आएँगे तो खुश हो जाएँगे। जल्दी आइएगा। मेरे लिए एक कलर बॉक्स लेते आइएगा।

आपकी लाडली

भूमिका

व्यावसायिक पत्र

सेवा में,

ग्राम पंचायत विकास अधिकारी

रानीपुर, कौशाम्बी।

महोदय,

बरसात के दिनों में गाँव के पूरब वाले रास्ते पानी में डूब जाते हैं, जिससे हम लोगों को स्कूल आने-जाने में परेशानी होती है।

आपसे अनुरोध है कि उस रास्ते को ठीक कराने की कृपा करें।

सादर

दिनांक: 22-10-2018

भवदीय,

बसंत लाल

अभ्यास

1. बहुविकल्पीय प्रश्न

सही विकल्प के सामने दिए गए गोल घेरे को काला करिए-

(1) घर की सजावट का अर्थ है-

(क)मँहगी वस्तुएँ खरीद कर घर में रखना

(ख)सोफा- कुर्सी, मेज आदि को बैठक में लगाना

(ग)घर की दीवारों को व्यवस्थित कर उनमें कलात्मकता उत्पन्न करना

(2) सजावट के नियम हैं-

(क)अनुरूपता, अनुपात, संतुलन, दबाव, लय

(ख)अनुकूलता, संयोजन, अनुपात, क्रमायोजन, लय

(ग)अनुरूपता, संयोजन, संतुलन, अनुपात, दबाव

(घ)अनुरूपता, अनुपात, संयोजन, क्रमायोजन, लय

2. अति लघु उत्तरीय प्रश्न

(क) बैठक की सजावट में कितनी शैलियाँ होती हैं ? नाम लिखिए।

(ख) बधाई पत्र किन-किन अवसरों पर दिए जाते हैं ?

3. लघु उत्तरीय प्रश्न

(क) घर की सजावट से क्या लाभ है, किन्हीं चार बिंदुओं को लिखिए।

(ख) यात्रा की तैयारी के लिए किन-किन बातों का ध्यान रखना चाहिए ?

(ग) अपने शिक्षक को अपने घर की सजावट के बारे में एक पत्र लिखिए।

4. दीर्घ उत्तरीय प्रश्न

(क) गृह सज्जा के प्रमुख नियम कौन-कौन से हैं ? वर्णन करें।

(ख) गृह सज्जा के लिए उपयुक्त साधन क्या हैं ? घर को सजाने में उनकी क्या भूमिका है ?

(ग) संतुलन, लय एवं दबाव पर टिप्पणी लिखिए।

प्रोजेक्ट वर्क -

चार्ट पेपर पर भारतीय एवं पाश्चात्य शैली से सुसज्जित बैठक कक्ष बनाकर एवं रंगकर अपनी कक्षा में लगाएँ।